अध्याय चतुर्थ
विश्लेषण एवं
व्याख्या

अध्याय चतुर्थ

विश्लेषण एवं व्याख्या

अध्ययन हेतु स्वयं निर्मित उपकरण के माध्यम से अध्ययन के लिए चुने गये न्यादर्श द्वारा प्रदत्तो का संकलन किया गया। प्राप्त प्रदत्तो का विश्लेषण एवं व्याख्या इस अध्याय में किया गया हैं स्वनिर्मित परिकल्पनाओं की स्वीकृति तथा अस्वीकृति हेतु प्रदत्तों का समूह व उपसमूह में विभाजित कर विश्लेषण तथा अंतिम परिणाम ज्ञात किया गया जो नवीन सिद्धान्त की खोज अथवा सामान्यीकरण रूप में होता है अतः प्रदत्तो के विश्लेषण के अन्तर्गत उनके ज्ञान का अनेक परीक्षणों द्वारा शोध के उद्देश्यों का निर्णय प्राप्त किया जाता है।

पी.व्ही. युग के शब्दों में "संकलित तथ्यों के उचित संस्थिति संबंधों के रूप व्यवस्थित कर विचारपूर्ण आधार शिला की स्थापना करना ही विश्लेषण है अर्थात् विश्लेषण शोध का सृजनात्मक पक्ष है।"

प्रस्तुत अध्याय में उचित सांख्यिकी विधियों का उपयोग करके प्राप्त प्रदत्तों का विश्लेषण करने का प्रयास किया गया है। इस शोध अध्ययन हेतु कुल 5 परिकल्पनायें रखी गई हैं जिसकी जांच करने उपरांत त्वरित प्रदत्तों के निरंतर प्रस्तुतीकरण के लिए शोध समस्या के अध्ययन से निकले परिणाम की व्याख्या की गई है।

साथ ही वर्णनात्मक सांख्यिकी विश्लेषण द्वारा साहित्यक रूची एवं मुहावरे ज्ञान के विभिन्न घटकों के मध्य सहसंबंध व अर्न्तसहसंबंध की भी जांच की गई है। इसके साथ ही साहित्यिक रूचि एवं मुहावरे ज्ञान के घटकों की प्रकृति से संबंधित आँकड़ों को विश्लेषित किया गया है।

इस अध्याय के अन्तिम भाग में विद्यार्थियों के मुहावेरे ज्ञान के विभिन्न स्त्रोतों को भी विश्लेषित किया गया है।

4.1 वर्ग- प्रथम वर्णनात्मक सांख्यिकीय विश्लेषण

सांख्यिकी विश्लेषण के प्रथम वर्ग में शोधकर्ता द्वारा साहित्यिक रूचि एवं मुहावरे ज्ञान के विभिन्न घटकों के मध्य पाए जाने वाले सहसंबंध तथा अर्न्तसंबंधों को निम्न तालिकाओं के माध्यम से वर्णित किया गया है।

4.1.1 साहित्यिक रूचि एवं उसके घटक संबंधी तालिकाएं :- दी गई निम्न तालिकाओं में प्रत्येक घटक में आए प्रत्येक कथन का सॉंख्यिकी विश्लेषण कर व्याख्या दी गई है। तदुपरान्त साहित्यिक रूचि तथा उसके विभिन्न घटकों की प्रकृति का मध्यमान, मानक विचलन आदि को सारणीबद्ध कर विवेचित किया गया है।

4.1.1 साहित्यिक रूचि के प्रथम घटक "पठन" की आवृति तथा प्रतिशत को दर्शाने वाली तालिका –

क्र.	पद	सहमत		तटस्थ		असहमत	
		आवृत्ति	प्रतिशत	आवृत्ति	प्रतिशत	आवृत्ति	प्रतिशत
1.	अपठित गद्यांशों का उत्तर देना मुझे पसंद है।	133	88.7	8	5.3	9	6%
2.	पुस्तकालय में जाकर हिन्दी में लिखित विविध विषयों की पुस्तकें पढ़ना अच्छा लगता है।	132	88	–	–	18	12%
3.	हिन्दी पत्र पत्रिकाओं को पढ़ना मुझे रूचिकर लगता हैं।	123	82	8	5.3	19	127%
4.	हिन्दी कक्षा में पठन-पाठन के समय मुझे अच्छा लगता हैं।	120	80	5	3.3	25	16.7%
5.	खाली समय में मुझे हिन्दी की कहानियाँ पढ़ने में कोई आनंद प्राप्त नहीं होता है।	24	16	10	6.7	116	77.3%
6.	होडिंग्स पर लिखे गए वाक्यों मे त्रुटि होने पर मेरा मन सुधार कार्य के लिए प्रेरित होता है।	92	61.3	31	20.7	27	18%

विश्लेषण :- उपर्युक्त तालिका से ज्ञात होता है कि साहित्यिक रूचि के प्रथम घटक "पठन" के प्रति सभी विद्यार्थियों औसत से अधिक रूचि पाई गई है। "पठन घटक के प्रथम कथन "अपठित गद्यांश का उत्तर देना अधिकतर विद्यार्थियों को रूचिकर लगता है। इसलिए भाषा के प्रश्न पत्रों में इससे सबंधित प्रश्नों का समाविश किया जाता है। प्रारम्भिक किशोरावस्था के विद्यार्थियों में पुस्तकालय जाकर विविध पुस्तकें, पत्र,-पत्रिकाओं को पढ़ने में भी रूचि दिखाई देती है किंन्तु होर्डिंग्स पर लिखे गए वाक्यों में सुधार कार्य के प्रति कम रूचि दिखाई पड़ी जो कि विद्यार्थियों मे सही गलत पहचान के अभाव में नतीजा हो सकता है जो कि शिक्षण की कमजोरी की ओर इशारा करता है।

4.1.2 साहित्यिक रूचि के द्वितीय घटक "लेखन" रूचि की आवृत्ति तथा प्रतिशत को दर्शाने वाली तालिका –

क्र.	पद	सहमत		तटस्थ		असहमत	
		आवृत्ति	प्रतिशत	आवृत्ति	प्रतिशत	आवृत्ति	प्रतिशत
1.	विद्यालय की वार्षिक पत्रिका में स्वयं लिखित लेख देना मुझे अच्छा लगता हैं।	127	84.7	4	2.7	19	12.7%
2.	मैं हिन्दी का अंग्रेजी एवं अंग्रेजी का हिन्दी अनुवाद करने में स्वयं को समर्थ पाता/पाती हूँ।	102	68	8	5.3	40	26.7%
3.	हिन्दी पुस्तकों व अखबारों में उपलब्ध हिन्दी छपाई व लिखाई में की गई त्रुटियों पर मैं ध्यान नही देता/देती हूँ ।	29	19.3	11	7.3	110	73.3%
4.	कोई चित्र को देख कहानी रचना करना मुझे अच्छा लगता है।	117	78	4	2.7	29	19.3%
5.	मैं हिन्दी के विभिन्न विषयों पर निबंध लिखने में स्वयं को सक्षम नही पाता/पाती हूँ।	49	32.7	8	5.3	93	62%

विश्लेषण :- साहित्यिक रूचि के द्वितीय घटक ''लेखन' संबंधी रूचि को उपर्युक्त तालिका में देखने पर ज्ञात होता है कि लगभग 85 प्रतिशत विद्यार्थियों को विद्यालय की वार्षिक पत्रिका मे स्वयं लिखित लेख-कविता देना रूचिकर लगता है। अतः इस क्षेत्र की साहित्यिक रूचि के संबंध मे शिक्षक का यह दायित्व है कि वह सभी विद्यार्थियों को वार्षिक पत्रिका में लेख देने के लिए सहयोग प्रदान कर प्रोत्साहित करें जिससे कि विद्यार्थी इस क्षेत्र मे दक्ष हो व्यवसायिक कुशलता को प्राप्त कर सकें। इसी तरह 68 प्रतिशत विद्यार्थी हिन्दी अंग्रेजी का सामान्तर रूप से अनुवाद करने में भी स्वयं को समर्थ मानते हैं अतः इस क्षेत्र में भी भाषा शिक्षकों द्वारा प्रोत्साहित किये जाने पर विद्यार्थी भाषानुवाद में दक्ष हो सकते हैं।

4.1.3 साहित्यिक रूचि के तृतीय घटक ''व्याकरण संबंधी रूचि की आवृत्ति तथा प्रतिशत को दर्शाने वाली तालिका -

क्र.	पद	सहमत		तटस्थ		असहमत	
		आवृत्ति	प्रतिशत	आवृत्ति	प्रतिशत	आवृत्ति	प्रतिशत
1.	हिन्दी कक्षा में व्याकरण को दिया जाने वाला समय मुझे पसंद है।	121	80.7	1	.7	28	18.7%
2.	पाठ्यपुस्तक में वर्णित व्याकरण अंश को हल करना मुझे रोचक लगता है।	116	77.3	10	6.7	24	16%
3.	व्याकरण पर जोर देते हुए पाठ को पढ़ाने वाली विधि मुझे अच्छी लगती है।	120	80	-	-	30	20%
4.	मुहावरे के माध्यम से किसी विषय वस्तु को समझाना या बताना मुझे अच्छा लगता है।	123	82	4	2.7	23	15.3%
5.	खाली समय में सहपाठियों को व्याकरण का ज्ञान देने का कार्य मुझे पसंद आएगा।	109	72.7	2	1.3	39	26%
6.	व्याकरण की विषय वस्तु को मैं सरलता से याद नहीं कर सकता/सकती हूँ।	56	37.3	2	1.3	92	61.3%
7.	मुझे व्याकरण संबंधी गृहकार्य करना पसंद है।	105	70	3	2	42	28%

विश्लेषण :- तालिका से ज्ञात होता है कि विद्यार्थियों को व्याकरणिक घटक में भी औसत से अधिक रूचि पाई गई है। शिक्षार्थी व्याकरणांश, व्याकरण की कक्षा व्याकरणिक विधि विषय वस्तु तथा व्याकरण संबंधी गृहकार्य करने में भी रूचि रखते है। अतः शिक्षक को पाठ्यपुस्तक में वर्णित विषयवस्तु को व्याकरणिक ढंग से स्पष्ट करते हुए पढ़ाना चाहिए।

4.1.4 साहित्यिक रूचि के चतुर्थ घटक "वार्तालाप संबंधी रूचि" की आवृत्ति एवं प्रतिशत को दर्शाने वाली तालिका –

क्र.	पद	सहमत		तटस्थ		असहमत	
		आवृत्ति	प्रतिशत	आवृत्ति	प्रतिशत	आवृत्ति	प्रतिशत
1	साथियों द्वारा बोले गए गलत वाक्यों को भी मैं स्वीकार कर लेता /लेती हूँ।	41	27.3	1	.7	108	72
2	मैं हिन्दी भाषा को बातचीत करने व 3समझने का एक सशक्त माध्यम मानता/ मानती हूँ।	129	86	8	5.3	13	8.7
3	मैं कम, पर शुद्ध व सही हिन्दी में बोलना पसंद करता/करती हूँ ।	133	88.7	3	2	14	9.3
4	बातचीत में हन्दी–अंग्रेजी का मिश्रित प्रयोग किया जाना उचित है।	66	44	5	3.3	79	52.7
5	बड़ो द्वारा भी भाषा के गलत प्रयोग किए जाने पर मैं उसमें सुधार करना पसंद करता हूँ।	124	82.7	3	2	23	15.3

विश्लेषण :- साहित्यिक रूचि के चतुर्थ घटक "वार्तालाप संबंधी रूचि" को उपर्युक्त तालिका में आए आँकड़ों के आधार पर देखने से ज्ञात होता है कि लगभग विद्यार्थी सही हिन्दी भाषा में बातचीत करना पसंद करते हैं तथा अधिकांश विद्यार्थी आधुनिक संस्कृति से प्रभावित हो भाषा के मिश्रित प्रयोग को भी उचित समझते है।

4.1.5 साहित्यिक रूचि के पंचम घटक "हिन्दी सहगामी क्रियाओं में रूचि" की आवृत्ति तथा प्रतिशत को दर्शाने वाली तालिका –

क्र.	पद	सहमत		तटस्थ		असहमत	
		आवृत्ति	प्रतिशत	आवृत्ति	प्रतिशत	आवृत्ति	प्रतिशत
1.	मैं हिन्दी से संबंधित विभिन्न प्रतियोगीताओं में बढ़कर हिस्सा लेती/लेता हूँ	108	72	6	4	36	24
2.	हिन्दी सप्ताह का आयोजन विद्यालय में होना बहुत जरूरी है।	145	96.7	–	–	5	3.3
3.	प्रातः कालीन प्रार्थनाओं में हिन्दी प्रार्थनाओं का होना उचित नहीं है।	25	16.7	14	9.3	111	74
4.	घर में बुजुर्गो से हिन्दी कहानियाँ सुनने में मुझे आनंद आता है।	145	96.7	–	–	5	3.3
5.	आजकल के फिल्मी गाने अर्थ की अपेक्षा मनोरंजन पर अधिक ध्यान देते हुए बन रहें हैं।	113	75.3	5	3.3	32	21.3
6.	शैक्षणिक भ्रमण के रूप में, मैं हिन्दी भाषा प्रयोग शाला में घूमने के लिए जाना पसंद करूंगा/ करूंगी।	117	78	8	5.3	25	16.7

विश्लेषण:- उपर्युक्त तालिका से स्पष्ट होता है कि साहित्यिक रूचि के घटक हिन्दी सहगामी क्रियाओं में भाग लेना 72 प्रतिशत विद्यार्थियो को रूचिकर लगता है। तथा भारत जैसे हिन्दी बहुभाषी देश में 97 प्रतिशत विद्यार्थी हिन्दी सप्ताह का आयोजन किया जाना जरूरी मानते है। 74 प्रतिशत विद्यार्थी

विद्यालय में हिन्दी प्रार्थनाओं का आयोजन उचित मानते है। जोकि उनके मूल्यों की ओर रूझान को भी दर्शाती हैं प्रारम्भिक किशोरावस्था के विद्यार्थी भ्रमण के लिए शैक्षिक स्थल पर भी जाना पसंद करते है।

4.1.6 साहित्यिक रूचि के छठवें घटक "हिन्दी कक्षा शिक्षण में रूचि" की आवृत्ति तथा प्रतिशत को दर्शाने वाली तालिका –

क्र.	पद	सहमत		तटस्थ		असहमत	
		आवृत्ति	प्रतिशत	आवृत्ति	प्रतिशत	आवृत्ति	प्रतिशत
1.	हिन्दी की कक्षा छोड़ना मुझे पसंद नही है।	114	76	4	2.7	32	21.3
2.	हिन्दी भाषा की शिक्षक / शिक्षिका मुझे अच्छी लगती हैं।	139	92.7	4	2.7	7	4.7

<u>विश्लेषणः–</u> उपर्युक्त तालिका से पता चलता है कि विद्यार्थियों को हिन्दी शिक्षणकाल एवं हिन्दी भाषा के गुरूजन भी प्रिय है। जो कि उनके हिन्दी भाषा के लगाव और रूचि को दर्शाते हैं।

4.1.7 साहित्यिक रूचि के सॉंतवे घटक "साहित्य संबंधी रूचि" की आवृत्ति तथा प्रतिशत को दर्शाने वाली तालिका –

क्र.	पद	सहमत		तटस्थ		असहमत	
		आवृत्ति	प्रतिशत	आवृत्ति	प्रतिशत	आवृत्ति	प्रतिशत
1.	हिन्दी के साहित्यकारों की जानकारी रखना मुझे अच्छा लगता है।	122	81.3	4	2.7	24	16
2.	हिन्दी की पुरस्कृत कृतियों की जानंकारी रखना मुझे पसंद है।	114	76	15	10	21	14
3.	हिदी में प्रकाशित लेखों को पढ़ना मुझे पसंद नहीं है।	36	24	6	4	108	72
4.	मैं खाली समय में कविता का लेखन करना पसंद करता/करती हूँ।	108	72	4	2.7	38	25.3

विश्लेषण :- साहित्यिक रूचि के सातवें घटक "साहित्यिक संबंधी रूचि से प्राप्त आँकड़ों को देखने के उपरान्त ज्ञात होता है कि विद्यार्थियों को उनके स्तारानुरूप पाठ्क्रम में वर्णित साहित्यकारों, निबन्धकारों नाटककारों तथा कथाकारों एवं उनकी कृतियों के बारे में जानकारी रखना भी पसंद है। अतः यहां भी शिक्षक का दायित्व बनता हैं कि पाठ्यपुस्तक के प्राक्कथन में दिए गए उद्देश्यानुसार एवं विद्यार्थियों के संज्ञानात्मक स्तर अनुसार उन्हें इनकी जानकारी समय-समय पर देते रहें।

4.1.8 साहित्यिक रूचि और उसके विभिन्न घटकों की प्रकृति संबंधी तालिका-

क्र.	घटक	औसत मध्यमान	मानक विचलन	विषमता	कुकुदता	न्यू.	अधि.
1.	पठन	9.97	1.86	-.742	1.67	5	12
2.	लेखन	7.55	2.12	-.749	.008	1	10
3.	व्याकरण	10.63	2.77	-.66	.35	4	14
4.	वार्तालाप	7.77	2	-.83	.68	0	10
5.	सहगामी क्रियाएं	10.07	1.80	-.91	.72	4	12
6.	हिन्दी कक्षा शिक्षक	3.43	.91	-1.16	.00	0	4
7.	हिन्दी साहित्य	6.22	1.60	-.94	1.114	0	8
8.	साहित्यिक रूचि	55.72	7.39	-.47	.45	30	70

विश्लेषण :- साहित्यिक रूचि एवं उसने विभिन्न घटकों की प्रकृति संबंधी उपर्युक्त तालिका देखने पर स्पष्ट होता है कि साहित्यिक रूचि के सभी घटकों की विषमता ऋणात्मक ही पाई गई है पठन घटक का औसत मध्यमान 9.97 मानक विचलन 1.86 तथा चर्पट वक्रीय कुकुदता 1.67 पाई गई है। लेखन का औसत मध्यमान 7.55, मानक विचलन 2.12 कूटवक्रीय कुकुदता .008 पाई गई है। व्याकरण घटक का औसत मध्यमान 10.63 (सर्वाधिक), मानक विचलन 2.77 तथा चर्पट वक्रीय कुकुदता .35 पाई गई। वार्तालाप घटक का औसत मध्यमान 7.77, मानक विचलन 2 तथा चर्पट वक्रीय

कुकुदता .68 पाई गई। सहगामी क्रियाओं का औसत मध्यमान 10.07, मानक विचलन 1.80 कुकुदता .72 (चर्पट वक्रीय) पाई गई। हिन्दी कक्षा शिक्षण का औसत मध्यमान 3.42 मानक विचलन .91 तथा तुंग वक्रीय कुकुदता .00 पाई गई है हिन्दी "साहित्य संबंधी घटक" का औसत मध्यमान 6.22 मानक विचलन 1.60, चर्पट वक्रीय कुकुदता 1.114 पाई गई है।

इस तरह उपर्युक्त तालिका में देखने के उपरांत पता चलता है कि सम्पूर्ण साहित्यिक रूचि का औसत मध्यमान 55.72, मानक विचलन 7.39 ऋणात्मक विषमता तथा अल्पवक्रीय कुकुदता .45 पाई गई है।

4.1.9 <u>मुहावरे ज्ञान योग्यता में उल्लेखित मुहावरों का घटकानुसार वर्णन –</u>

निम्न तालिकाओं के माध्यम से ज्ञात होता है कि विद्यार्थियों के मुहावरे ज्ञान संबंधी योग्यता की वस्तु स्थिति क्या है तथा विद्यार्थियों को किस क्षेत्र से संबंधित मुहावरों का अधिक ज्ञान है।

4.1.9 क्रोध संबंधी मुहावरों की आवृत्ति तथा प्रतिशत दर्शाने वाली तालिका –

क्र.	मुहावरे	सही		गलत	
		आवृत्ति	प्रतिशत	आवृत्ति	प्रतिशत
1.	अंगारे उगलना	133	88.7	17	11.3
2.	आड़े हाथों लेना	97	64.7	53	35.3
3.	आपे से बाहर होना	125	83.3	25	16.7
4.	आग बबूला होना	137	91.3	13	8.7
5.	बरस पड़ना	136	90.7	14	9.3
6.	लाल पीला होना	132	88	18	12
7.	आँखे दिखाना	131	87.3	19	12.7

<u>विश्लेषण :–</u> उपर्युक्त "क्रोध" संबंधी मुहावरों की तालिका देखने पर स्पष्ट होता है कि लगभग 75 प्रतिशत विद्यार्थी इन मुहावरों से परिचित हैं तथा उनको क्रोध संवेग संबंधी मुहावरों के अर्थ ज्ञात है जिसके आधार पर हम अनुमान लगा सकते हैं कि किशोरावस्था तक आते-आते विद्यार्थी में क्रोध

संवेग संबंधी मुहावरों से परिचित हो चुके होते हैं क्योंकि कई बार उनके आदरणीय लोगों द्वारा क्रोध करते समय इन मुहावरों का प्रयोग करने से वे परिचित हो चुके होते हैं।

4.1.10 "लड़ाई" संबंधी मुहावरों की आवृत्ति तथा प्रतिशत दर्शाने वाली तालिका–

क्र.	मुहावरे	सही		गलत	
		आवृत्ति	प्रतिशत	आवृत्ति	प्रतिशत
1.	ईंट का जवाब पत्थर से देना	113	75.3	37	24.7
2.	कमर बांधना	115	76.7	35	23.3
3.	घुटने टेकना	139	92.7	11	7.3

विश्लेषणः– उपर्युक्त तालिका से स्पष्ट होता है कि "लड़ाई" संबंधी मुहावरों तथा उनके अर्थ से भी लगभग 80 प्रतिशत विद्यार्थी परिचित हैं। जो उनकी स्वाभाविक प्रकृति प्रदत्त आवेशित होने की प्रकृति की भी झलक देता है।

4.1.11 "जानवर या पक्षी" संबंधी मुहावरों की आवृत्ति तथा प्रतिशत दर्शाने वाली तालिका –

क्र.	मुहावरे	सही		गलत	
		आवृत्ति	प्रतिशत	आवृत्ति	प्रतिशत
1.	उल्लू बनाना	144	96	6	4
2.	ऊंट के मुंह में जीरा	127	84.7	23	15.3
3.	मक्खियाँ मारना	139	92.7	11	7.3
4.	आस्तीन का सांप	122	81.3	28	18.7
5.	घोड़े बेचकर सोना	115	76.7	35	23.3
6.	पेट में चूहे दौड़ना	144	96	6	4
7.	मगरमच्छ के आँसू बहाना	139	92.7	10	6.7
8.	बगुला भगत	107	71.3	43	28.7

विश्लेषणः– जानवर या पक्षी से संबंधित मुहावरों के अर्थ योग्यता संबंधी सारणी को देखने के उपरांत पता चलता है कि 80 प्रतिशत से ऊपर

विद्यार्थियों को ये मुहावरे अर्थ के साथ पता हैं, क्योकि ये मुहावरे उनके दैनिक जीवन से घनिष्ठ रूप से संबंधित हैं। तथा रोजमर्रा की बातचीत में ये मुहावरे प्रायः उनके द्वारा बोले व सुने जाते हैं।

4.1.12 शरीरांग संबंधी मुहावरों की आवृत्ति तथा प्रतिशत को दर्शाने वाली तालिका–

क्र.	मुहावरे	सही		गलत	
		आवृत्ति	प्रतिशत	आवृत्ति	प्रतिशत
1.	अगुँली पर नाचना	118	78.7	32	21.3
2.	आंखों का तारा	127	84.7	23	15.3
3.	एड़ी चोटी का जोर लगाना	122	81.3	28	18.7
4.	छोटा मुंह बड़ी बात	145	96.7	5	3.3
5.	जान हथेली पर रखना	145	96.7	5	3.3
6.	टाँग अड़ाना	127	84.7	23	15.3
7.	नाक में दम करना	140	93.3	10	6.7

विश्लेषणः– उपर्युक्त सारणी से देखने पर ज्ञात होता है कि शरीरांग संबंधी मुहावरों के अर्थ भी 80 प्रतिशत से अधिक विद्यार्थियों ने सही दिये है जो कि उनके मुहावरे ज्ञान योग्यता के अधिकतम रूप को दर्शाता है।

4.1.13 मुहावरे ज्ञान योग्यता और उसके विभिन्न घटकों की प्रकृति संबंधी तालिका–

क्र.	घटक	औसत मध्यमान	मानक विचलन	विषमता	कुकुदता	न्यू	अधि
1.	क्रोध संबंधी	5.94	1.10	−1.77	5.84	0	7
2.	लड़ाई संबंधी	2.45	.66	−.93	0.37	0	3
3.	पशु संबंधी	6.99	1.43	.27	14.01	0	16
4.	शरीरांग संबंधी	6.16	1.02	−1.65	4.13	1	7
5.	मुहावरे ज्ञान संबंधी	21.53	3.09	−2.25	13.18	1	32

विश्लेषण :- उपर्युक्त तालिका देखने पर स्पष्ट होता है कि केवल पशु संबंधी मुहावरे ज्ञान मे धनात्मक विषमता पाई गई है बाकि अन्य सभी घटकों से संबंधित मुहावरों में ऋणात्मक विषमता पाई गई है। "क्रोध" संबंधी मुहावरों का औसत मध्मान 5.94, मानक विचलन 1.10 चर्पट वक्रीय कुकुदता 5.84 पाई गई। इसी तरह लड़ाई संबंधी मुहावरों का औसत मध्यमान 2.45, मानक विचलन .66, चर्पट वक्रीय कुकुदता .37 पाई गई है। पशु संबंधी मुहावरो का औसत मध्यमान 6.99, मानक विचलन 1.43, धनात्मक विषमता, चर्पटवक्रीय कुकुदता 14.01 पाई गई है। तथा शरीरांग संबंधी मुहावरों का औसत मध्यमान 6.16 मानक विचलन 1.02 चर्पट वक्रीय कुकुदता 4.13 पाई गई है।

इस तरह सम्पूर्ण तालिका देखने के उपरांत मुहावरे ज्ञान संबंधी योग्यता का औसत मध्यमान 21.53, मानक विचलन 3.09, ऋणात्मक विषमता तत्था 13.18 अल्पवक्रीय कुकुदता ज्ञात होती है।

उपर्युक्त सभी मुहावरे ज्ञान योग्यता संबंधी तालिकाओं पर नजर डालने पर पता चलता है कि विद्यार्थियों को इन मुहावरे के अर्थ की जानकारी अधिक है केवल, कमी बातचीत एवं वाक्य में उसके प्रयोगात्मक रूप में है, अतः शिक्षक का कर्तव्य है कि वो बातचीत में तथा साहित्यिक रूचि के विभिन्न घटकों में (यथा लेखन, वार्तालाप) इसका अधिकाधिक प्रयोग करना विद्यार्थियों को सीखांए जिससे वे व्याकरणिक घटक के मुहावरे संबंधी क्षेत्र में भी निपुण हो जाएं।

4.2 वर्ग द्वितीय–परिकल्पना जांच संबंधी विश्लेषण तालिकाएं –

द्वितीय वर्ग परिकल्पनाओं की जांच से संबंधित है जिसके अंतर्गत शोधकर्ता द्वारा बनाई गई सभी परिकल्पनाओं की जांच कर उनकी सार्थकता .01स्तर पर देखकर उनका विश्लेषण किया जा रहा है।

हिन्दी साहित्यिक रूचि एवं मुहावरे ज्ञान के परिप्रेक्ष्य में परिकल्पना का परीक्षण –

इस शोधकार्य की प्रथम परिकल्पना यह है कि "आठवी कक्षा के

विद्यार्थियों में हिन्दी साहित्यिक रूचि और मुहावरे ज्ञान में कोई सार्थक संबंध नहीं हैं'' ''आशय यह है कि विद्यार्थी की विषय हिन्दी की साहित्यिक रूचि और उनके मुहावरे संबंधी ज्ञान में कोई सार्थक संबंध नहीं है। तालिका क्र. 4.2.1 में परिकल्पना के परीक्षण के उपरांत परिणाम को दर्शाया गया है।

तालिका क्र.4.21.साहित्यिक रूचि और मुहावरे ज्ञान के सहसंबंध (r) की सार्थकता तालिका –

चर	कुल प्रतिदर्श N	मुक्तांश df	सहसंबंध r	सार्थकता
साहित्यिक रूचि मुहावरे ज्ञान	150	148	–0.029	सार्थक नहीं

उपर्युक्त तालिका से यह ज्ञात होता है कि सहसंबंध (r) का मूल्य सार्थक नहीं है इसलिए परिकल्पना स्वीकृत होती है। जो यह दर्शती है कि आठवीं कक्षा के विद्यार्थियों में साहित्यिक रूचि और मुहावरे ज्ञान मे काई सार्थक संबंध नही है। जिसका आशय है कि मुहावरे ज्ञान उनकी साहित्यिक रूचि से विल्कुल स्वतंत्र है।

शोधकर्ता यहां भी देखना चाहता है कि साहित्यिक रूचि के घटकों का तथा मुहावरे ज्ञान के घटकों के बीच अन्तःसहसंबंध तथा अंर्तसहसंबंध किस प्रकार है इसके लिये निम्न तालिकायें है –

4.2.2 साहित्यिक रूचि के घटकों के मध्य सहसंबंध मैट्रिक्स दर्शाने वाली त तालिका–

घटक	पठन	लेखन	व्याकरण	वार्तालाप	सहगामी क्रियाएं	कक्षा शिक्षण	साहित्य
पठन	1						
लेखन	0.287**	1					
व्याकरण	0.302**	0.164*	1				
वार्तालाप	0.150	0.04	0.093	1			
सहगामी क्रियाएं	0.187*	0.149	0.50**	0. 228**	1		
कक्षा शिक्षण	0.026	0.116	0.103	0.1	0.030	1	
साहित्य	0.318**	0.124	0.432**	0.160	0.311**	0.123	1

**सहसंबंध की सार्थकता 0.01 स्तर पर

विश्लेषण :- तालिका से ज्ञात होता है साहित्यिक रूचि के विभिन्न घटकों में पठन, लेखन, व्याकरण, सहगामी क्रियाएं आदि एक दूसरे से सार्थक रूप से संबंधित है किन्तु वार्तालाप एवं कक्षा शिक्षण का साहित्यिक रूचि के किसी भी घटक के साथ कोई सार्थक संबंध नहीं पाया गया। जबकि साहित्य संबंधी घटक पठन, व्याकरण, एवं सहगामी क्रियाएं से सार्थक रूप से संबंधित पाई गई जबकि लेखन, वार्तालाप, एवं कक्षा शिक्षण से इसका कोई सहसंबंध नही पाया गया।

इन आँकड़ों पर गौर से दृष्टि डालने पर पता चलता है कि विद्यालय की औपचारिक शिक्षा में साहित्यिक रूचि के घटक पठन, लेखन, व्याकरण तथा सहगामी क्रियाओं से विद्यार्थियों को प्रशिक्षित किया जाता है अतः ये सभी घटक एक दूसरे से सम्बंधित पाए गए, जबकि साहित्यिक रूचि के अन्य घटक साहित्य एवं वार्तालाप का शिक्षण में अभाव होने के कारण इनका उनकी साहित्यिक रूचि के अन्य घटकों के साथ कोई सार्थक संबंध नही पाया गया।

तालिका क्र.4.2.3 मुहावरे ज्ञान के घटकों के मध्य सहसम्बंध मैट्रिक्स को दर्शाने वाली तालिका–

घटक	क्रोध	लड़ाई	जानवर	शरीरांग
क्रोध	1			
लड़ाई	0.268**	1		
जानवर	0.384**	0.341**	1	
शरीरांग	0.378**	0.300**	0.451**	1

**सहसंबंध की सार्थकता 0.01 स्तर पर

विश्लेषण :- मुहावरे ज्ञान योग्यता के क्रोध, लड़ाई, जानवर, शरीरांग संबंधी सभी मुहावरे आपस में सार्थक रूप से सहसम्बन्धित पाए गए क्योंकि आठवीं कक्षा के पाठ्यक्रम में इन सभी सामान्य मुहावरों का शिक्षण, शिक्षक द्वारा किया जाता है।

4.2.4 साहित्यिक रूचि और मुहावरे ज्ञान के घटकों मे आपसी सहसंबंध मैट्रिक को दर्शाने वाली तालिका –

घटक	क्रोध	लड़ाई	पशु	शरीरांग
पठन	−0.03	−0.01	0.02	0.38
लेखन	0.011	0.12	0.16	0.06
व्याकरण	−0.08	−0.12	−0.12	−0.12
वार्तालाप	0.036	−0.01	0.04	0.119
सहगामी क्रियाएं	−0.08	−0.07	−0.09	0.015
हिन्दी कक्षा शिक्षण	−0.02	0.13	−0.05	0.04
साहित्य	−0.05	−0.18	−0.01	−0.12

विश्लेषणः– उपर्युक्त तालिका देखने पर स्पष्ट होता है कि साहित्यिक रूचि के विभिन्न घटक–पठन–लेखन, व्याकरण, वार्तालाप, सहगामी क्रियाएं, कक्षा शिक्षण तथा साहित्य का विभिन्न मुहावरे ज्ञान योग्यता के घटक, क्रोध, लड़ाई, पशु तथा शरीरांग मुहावरों में आपस में कोई सहसंबंध नहीं पाया जा रहा है। जिससे आशय है कि विद्यार्थियों की साहित्यिक रुचि और उनका मुहावरा ज्ञान दोनों ही अपने आप में स्वतंत्र विषय है अर्थात विद्यार्थियों की किसी भी साहित्यिक रूचि के घटक पर मुहावरे ज्ञान का प्रभाव दिखाई नहीं देता है।

इस तालिका के आधार पर हम तात्पर्य निकाल सकते हैं कि विद्यार्थी इन मुहावरों को केवल पाठ्क्रम के व्याकरणांश में शामिल एक पाठ के रूप में ही पढ़ते है और उनका प्रयोग अपने दैनिक जीवन के वार्तालाप, लेखन आदि किसी भी क्षेत्र में नहीं करते हैं अतः यहां शिक्षक का यह दायित्व बनता है कि विद्यार्थियों इन मुहावरों का ज्ञान केवल एक पाठ या प्रश्न पत्र में आए प्रश्न को रटकर हल करने के रूप में न देकर अपितु अपने जीवन में कैसे उपयोगी बना सकते हैं का शिक्षण प्रदान करें।

शोध की द्वितीय परिकल्पाना बताती है कि शासकीय एवं अशासकीय विद्यालयों में पढ़ने वाले विद्यार्थियों की साहित्यिक रूचि में कोई सार्थक अन्तर नही है। इस परिकल्पना का परिक्षण कर निम्न तालिका में दर्शाया गया है।-

4.2.5 शासकीय एवं अशासकीय विद्यालयों के विद्यार्थियों की साहित्यिक रूचि को दर्शाने वाली "टी" मान की सार्थकता तालिका –

विद्यालय के प्रकार	औसत मध्यमान	मानक विचलन	कुल प्रतिदर्श	मुक्ताशं	टी. मान	सार्थकता
शासकीय	55.24	7.70	60	148	0.642	सार्थक नहीं
अशासकीय	56.03	7.21	90			

तालिका से ज्ञात होता है कि विद्यालय प्रकार के परिप्रेक्ष्य में "टी"का मान सार्थक नही है इसलिए परिकल्पना को स्वीकृत किया जाता है। यह दर्शाता है कि शासकीय एवं अशासकीय विद्यालयों में पढ़ने वाले विद्यार्थियों की साहित्यिक रूचि में कोई सार्थक अन्तर नहीं है। इसका तात्पर्य है कि शासकीय व अशासकीय विद्यालयों में पढ़ने वाले विद्यार्थियों की साहित्य रूचि करीब-करीब समान है।

शोध की तीसरी परिकल्पना बताती है कि शासकीय एवं अशासकीय विद्यालयों में पढ़ने वाले विद्यार्थियों के मुहावरे ज्ञान में कोई सार्थक अन्तर नहीं है। इस परिकल्पना का परीक्षण निम्न तालिका में दर्शाया गया है –

तालिका-4.2.6 शासकीय एवं अशासकीय विद्यालयों के विद्यार्थियों के मुहावरे ज्ञान को दर्शाने वाले "टी" मान की सार्थकता तालिका-

विद्यालय के प्रकार	औसत मध्यमान	मानक विचलन	कुल प्रतिदर्श	मुक्तांश	टी. मान	सार्थकता
शासकीय	22.50	2.40	60	148	3.225	सार्थक
अशासकीय	20.89	3.33	90			

तालिका से ज्ञात होता है कि विद्यालय प्रकार के परिप्रेक्ष्य में विद्यार्थियों के मुहावरे ज्ञान से प्राप्त 'टी' का मान सार्थक है। अतः परिकल्पना को अस्वीकृत किया जाता है इसलिए परिकल्पना कि शासकीय एवं अशासकीय विद्यालयों में पढ़ने वाले विद्यार्थियों के ज्ञान में सार्थक अन्तर है। क्योंकि प्राप्त 'टी' के मान से ज्ञात होता है कि मुहावरे ज्ञाने मे शासकीय व अशासकीय विद्यालयों के विद्यार्थियों में सार्थक अन्तर पाया गया है। शासकीय विद्यालयों के विद्यार्थियों मे मुहावरों का ज्ञान अधिक पाया गया है। यहां 0.01 स्तर पर सार्थक अन्तर पाया गया।

शोध की चतुर्थ परिकल्पना बताती है कि लिंग के आधार पर विद्यार्थियों की साहित्यिक रूचि में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।

इस परिकल्पना का परीक्षण निम्न तालिका में बताया गया है –

तालिका – 4.2.7 लिंग के आधार पर विद्यार्थियों की साहित्यिक रूचि को दर्शाने वाली "टी" मान की सार्थकता तालिका –

लिंग	औसत मध्यमान	मानक विचलन	कुल प्रतिदर्श	मुक्तांश	टी. मान	सार्थकता
छात्र	54.26	6.83	47	148	1.649	सार्थक नहीं
छात्रा	56.39	7.57	103			

उपर्युक्त तालिका को देखने पर ज्ञात होता हे कि लिंग के परिप्रेक्ष्य में टी' मान सार्थक नहीं है अतः परिकल्पना को स्वीकृत होती है कि लिंग के आधार पर विद्यार्थियों की साहित्यिक रूचि में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।

शोध की पाँचवी परिकल्पना बताती है, कि लिंग के आधार पर विद्यार्थियों के मुहावरे ज्ञान में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।

इस परिकल्पना का परीक्षण निम्न तालिका में बताया गया है –

तालिका– 4.2.8 लिंग भेद के आधार पर विद्यार्थियों के मुहावरे ज्ञान को दर्शाने वाली 'टी' मान की सार्थकता तालिका–

लिंग	औसत मध्यमान	मानक विचलन	कुल प्रतिदर्श	मुक्तांश	टी. मान	सार्थकता
छात्र	22.28	1.64	47	148	2.010	सार्थक नहीं
छात्रा	21.19	3.52	103			

उपर्युक्त तालिका देखने पर स्पष्ट होता है कि 'टी' मान .01 स्तर पर सार्थक नहीं है अतः परिकल्पना को स्वीकृत किया जाता है कि लिंग के आधार पर विद्यार्थियो के मुहावरे ज्ञान में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।

मुहावरे ज्ञान के संदर्भ में छात्रों का औसत मध्यमान 22.28 पाया गया जो कि छात्राओं के औसत मध्यमान 21.19 से अधिक है जो दर्शाता है कि छात्रों में मुहावरा ज्ञान छात्राओं की अपेक्षा अधिक है।

4.3 वर्ग तृतीय–विद्यार्थियों के मुहावरे ज्ञान के स्त्रोत ज्ञात करने संबंधी तालिका –

क्र.	मुहावरे	किताब		शिक्षक		अभिभावक		अन्य	
		आवृत्ति	प्रतिशत	आवृत्ति	प्रतिशत	आवृत्ति	प्रतिशत	आवृत्ति	प्रतिशत
1.	बांए हाथ क्या खेल	61	40.7	30	20	11	7.3	34	22.7
2.	जले पर नमक छिड़कना	51	34	42	28	16	10.7	27	18
3.	मुंह में पानी आना	39	26	42	28	36	24	23	15.3
4.	काला अक्षर भैंस बराबर	33	22	49	32.7	23	15.3	24	16
5.	डूबते को तिनके का सहारा	33	22	34	22.7	18	12	29	19.3

क्र.	मुहावरे	किताब		शिक्षक		अभिभावक		अन्य	
		आवृत्ति	प्रतिशत	आवृत्ति	प्रतिशत	आवृत्ति	प्रतिशत	आवृत्ति	प्रतिशत
6.	नमक मिर्च लगाकर कहना	24	16	40	26.7	21	14	43	28.7
7.	गिरगिट की तरह रंग बदलना	36	24	24	16	25	16.7	39	26
8.	दिन में तारे नजर आना	39	26	39	26	25	16.7	22	14.7
9.	अपने मुंह मिया मिट्ठू बनना	33	22	35	23.3	22	14.7	30	20
10.	डींग मारना	32	21.3	29	19.3	8	5.3	30	20
कुल			**25.4**		**24.2**		**13.6**		**20.7**

विद्यार्थियों के मुहावरे ज्ञान के विभिन्न स्त्रोतों से संबंधित उपर्युक्त तालिका को देखने से ज्ञात होता है कि विद्यार्थियों को सर्वाधिक मुहावरों का ज्ञान विभिन्न भाषाई पुस्तकों से प्राप्त हुआ है, तदुपरांत शिक्षक भी उनके इस मुहावरें ज्ञान में काफी हद तक सहायक होते है।

विद्यार्थियों के मुहावरे ज्ञान में अन्य स्त्रोत यथा मित्र समूह, मिडिया, एवं समुदाय सहयोग भी काफी हद तक सहायक पाए गए हैं। विद्यार्थियों के मुहावरे ज्ञान में सर्वाधिक न्यून स्त्रोत उनके अभिभावक है, जिसके पीछे कारण हो सकता है कि इस स्तर तक आते-आते विद्यार्थी अपना सर्वाधिक समय विद्यालय, किताब, शिक्षक, मित्र समूह एवं मिडिया के साथ व्यतीत करता है। तथा वही से अपने ज्ञान को प्राप्त करता है, इसलिए निष्कर्षतः हम कह सकते हैं कि ज्ञान के निर्माण में इन सभी का सहयोग एवं वातावरण मिलना नितान्त आवश्यक है।